फरीदाबाद

मजदूर समाचार

राहें तलाशने-बनाने के लिए मजदूरों के अनुभवों व विचारों के आदान–प्रदान के जरियों में एक जरिया

'मजदूर समाचार' की कुछ सामग्री अंग्रेजी में इन्टरनेट पर है। देखें– < http://faridabadmajdoorsamachar.blogspot.in>

डाक पता : मजदूर लाईब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन.आई.टी. फरीदाबाद - 121001

नई सीरीज नम्बर 301   1/–   *जुलाई* 2013

सब और सब का (2)

इलेक्ट्रोनिक्स के दौर में साम्यवाद की दस्तक

✶ब्राजील में बस भाड़े, तुर्की में पार्क में इमारत, इन्डोनेशिया में तेल के भाव, बल्गेरिया में भाई-भतीजावाद, कीनिया में भ्रष्टाचार, नाइजीरिया में तेल के दाम, अमरीका में एक प्रतिशत का विरोध, स्वीडन में बाहर से आये युवाओं की इच्छायें, इंग्लैण्ड के स्थानीय बच्चों-युवाओं की चाहतें, यूनान में सरकारी नौकरियाँ कम करने..... तंजानिया-इराक-अफगानिस्तान-पाकिस्तान-रूस-साइप्रस-फ्रान्स-स्पेन-जर्मनी-इटली-सऊदी अरब-चीन-बंगलादेश-भारत-.....-मिश्र-..... यहाँ-वहाँ, इस-उस रूप में उभरते, यह-वह प्रश्न उठाते मामले अचम्भित कर देने वाली तेजी से फैलने लगे हैं। बहुत बड़ी सँख्या में लोग इन में शामिल हो रहे हैं। एक बात से आरम्भ हुआ मामला शीघ्र ही बहुत बातों — सब बातों को अपने में मिला लेता है। शुरुआती मामले का समाधान जब तक अधिकारी करते हैं तब तक बातें बहुत बढ जाती हैं और अधिकारियों को लोग सुनना बन्द कर देते हैं। उफनती, उमड़ती और उत्तेजित भीड़ का कोई नेता नहीं होता। ***मस्ती और गुस्से की जुगलबन्दी अनेक राग-रागनियों, अनगिनत लय-ताल वाले संगीत से सम्पूर्ण पथ्वी को सराबोर कर रही है। उत्सव और क्रोध का मिश्रण जीवन की विस्तत सम्भावनाओं को, जीवन के संगीत को सामने ला कर अधिकाधिक लोगों को आकर्षित कर रहा है।*** पुलिस और अर्द्धसैनिक बल लोगों को रोकने में नाकाम हो रहे हैं। हर प्रकार की सरकारें इन्हें काबू करने में नाकारा साबित हो रही हैं। ✶ हर सरकार ने सेना तथा गुप्तचर तन्त्र भी बहुत बढाये हैं। सिपाहियों और अफसरों के बीच मजदूरों और मैनेजरों के बीच वाले सम्बन्ध हैं। अमरीका सरकार की सेना के ही सिपाही उसकी पोल खोल रहे हैं और इधर तो उसके गुप्तचर तन्त्र के एक महत्वपूर्ण पुर्जे रहे एडवर्ड स्नोडेन नाम के व्यक्ति ने एक पर्दा थोड़ा हटा कर अमरीका सरकार को परेशान कर रखा है। 2011 और 2012 तो जैसे-तैसे निकल गये पर 2013 तो अभी आधा ही निकला है। डगमग सरकारों के हालात इतने खस्ता हो रहे हैं कि यूनान और साइप्रस की सरकारों ने सब लोगों के बैंक खातों से बीस प्रतिशत राशियाँ काट ली हैं। गम्भीर छवि वाले राष्ट्रपति-प्रधान मन्त्री-नेता-जनरल-चेयरमैन-डायरेक्टर-मैनेजर-ज्ञानी-विशेषज्ञ अत्याधिक चिन्तित हैं, किसी को नहीं पता कि 2013 के ही बचे छह महीनों में संसार कितना बदलेगा। ✶मस्ती और गुस्सा, उत्सव और क्रोध का मिश्रण आज जीवन की धड़कन है। ओखला, दिल्ली में 21 फरवरी 2013 को फैक्ट्रियों के मजदूरों की मस्ती और गुस्से की एक झलक दिखी थी। एकमेव और एकमय, सब और सब का की उमड़-घुमड़ का समय है यह। नये के आगमन की यह पूर्व वेला है।

1970 में अमरीका-यूरोप-जापान में इलेक्ट्रोनिक्स का उत्पादन में प्रवेश हुआ। दस वर्ष बाद चीन में। चीन के दस वर्ष बाद भारत में उत्पादन में इलेक्ट्रोनिक्स का प्रवेश हुआ..... जापान में 1992 में मैनेजमेन्टों के बीच टेम्परेरी और परमानेन्ट मजदूरों के बारे में बहस हुई थी। स्थाई मजदूर महँगे पड़ते हैं पर उनमें कम्पनी के प्रति कुछ वफादारी होती है। अस्थाई मजदूर सस्ते पड़ते हैं पर उनमें कम्पनी के प्रति कोई वफादारी नहीं होती। यह बातें उस बहस में थी। यह कम्पनियों की, सरकारों की बढती कमजोरी थी कि स्थाई मजदूर (कर्मचारी) रखना उनके बस के बाहर हो रहा था। दुनिया-भर में इन बीस वर्षों में टेम्परेरी वरकरों की सँख्या में बहुत तेजी से वृद्धि हुई है। और फिर, इलेक्ट्रोनिक्स के उत्पादन क्षेत्र में प्रवेश ने नये आविष्कारों की गति भी बहुत तेज कर दी। नई मशीनों के आगमन की बढती सम्भावना ने स्थाई मजदूरों के लिये स्थान और सिकोड़ दिया है। दो सौ वर्ष से बड़ी से और बड़ी होती फैक्ट्री को इलेक्ट्रोनिक्स ने कई टुकड़ों में कर अलग-अलग स्थान पर बनाना भी सहज बनाया है। टेम्परेरी मजदूरों की सँख्या का बढना कम्पनियों की, सरकारों की शक्ति नहीं दर्शाती बल्कि यह कम्पनी-सरकार की कमजोरी दिखाती है। कम्पनी के प्रति किसी-भी प्रकार की वफादारी नहीं होना, बीस-पच्चीस वर्ष की आयु के मजदूरों की बड़ी सँख्या का दस-बीस फैक्ट्रियों-कार्यस्थलों का अनुभव, तीन-चार शहरों में, गाँवों में रहने का तजुर्बा अनेक भ्रमों को हटा देता है और उन्हें कम्पनियों-सरकारों के लिये बहुत खतरनाक बना देता है। यहाँ फरीदाबाद तथा गुड़गाँव के कुछ उदाहरणों से परिवर्तनों और सम्भावनाओं की एक झलक प्रस्तुत करने का प्रयास कर रहे हैं। इन बीस वर्षों में फरीदाबाद में वर्कशॉपों तथा फैक्ट्रियों की सँख्या बहुत बढी है और कैजुअल वरकरों एवं ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों की सँख्या तो बहुत-ही तेजी से बढी है। इस दौरान गुड़गाँव में फैक्ट्रियाँ तो फरीदाबाद से कई गुणा तेजी से बढी ही हैं, संग-संग आई टी क्षेत्र के कॉल सेन्टर-बी पी ओ उल्लेखनीय बने हैं और विद्यालयों-अस्पतालों-होटलों-ट्रान्सपोर्ट में मजदूरों की सँख्या बहुत बड़ी हो गई है। जिक्र कर दें कि सन् 2000 में भी गुड़गाँव में मात्र तीन ई.एस.आई. डिस्पैन्सरी थी जबकि फरीदाबाद में दो ई.एस.आई. अस्पताल और 16 डिस्पैन्सरी थी।

✶फरीदाबाद स्थित ***ईस्ट इण्डिया कॉटन मिल*** में 7000 मजदूर थे और 300 क्लर्क उनकी हाजिरी लगाने, तनखा बनाने, बोनस, ग्रेच्युटी, ई.एस.आई., पी.एफ., एडवान्स के हिसाब-किताब का कार्य करते थे। मेज वाले कम्प्युटर के आगमन ने 300 क्लर्कों की जगह दो ऑपरेटर बैठा दिये। ईस्ट इण्डिया कॉटन मिल 1996 में बन्द हो गई — भारत में कताई, बुनाई, प्रोसेसिंग, रंगाई, छपाई एक स्थान पर करने वाली कम्पोजिट मिलों में से अधिकतर बन्द हो गई हैं जबकि इस दौरान कपड़े का उत्पादन कई गुणा बढ गया है। मुम्बई, अहमदाबाद, इन्दौर, कानपुर, दिल्ली में कपड़ा मिलों में अधिकतर मजदूर स्थाई होते थे। आज सूरत में ही हजारों स्थानों पर पावरलूमों पर दस लाख मजदूर पीस रेट पर कपड़ा बुनते हैं और वहीं अन्य एक हजार के करीब कार्यस्थलों पर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में दस लाख मजदूर कपड़ों की रंगाई-छपाई करते हैं। सूरत में काम करते बीस लाख कपड़ा मजदूरों में एक मजदूर भी स्थाई नहीं है।

✶फरीदाबाद स्थित ***केल्विनेटर*** फैक्ट्री का 1995 में ***व्हर्लपूल*** कम्पनी ने अधिग्रहण करते ही यूनियन के सहयोग से 2500 मजदूरों की छँटनी की थी। केल्विनेटर में 6000 स्थाई मजदूर थे, आज **(बाकी पेज तीन पर)**

फैक्ट्रियों में हालात की एक झलक

✶ ***हरियाणा*** सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन (1.1.2013 से) अकुशल मजदूर : 5212रुपये (8 घण्टे के 200 रुपये) ; अर्ध-कुशल अ : 5342 रुपये (8 घण्टे के 205 रुपये) ; अर्ध-कुशल ब : 5472 रुपये (8 घण्टे के 210 रुपये) ; कुशल श्रमिक अ : 5602 रुपये (8 घण्टे के 215रुपये) ; कुशल श्रमिक ब : 5732रुपये (8 घण्टे के 220रुपये) ; उच्च कुशल मजदूर : 5862 रुपये (8 घण्टे के 225रुपये)
✶ ***दिल्ली*** सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन (1.4.2013 से) अकुशल श्रमिक : 7722 रुपये (8 घण्टे के 297 रुपये) ; अर्ध-कुशल श्रमिक : 8528 रुपये (8 घण्टे के 328 रुपये) ; कुशल श्रमिक : 9386 रुपये (8 घण्टे के 361 रुपये) स्नातक और अधिक (स्टाफ) : 10,218 रुपये (8 घण्टे के 393 रुपये)

प्रिन्ट पैकेजिंग मजदूर : ''प्लॉट बी-70 ओखला फेज-1, दिल्ली स्थित फैक्ट्री में 6 दिन काम करने के बाद मैंने नौकरी छोड़ दी। पैसे माँगने पर डायरेक्टर बोला कि पैसे नहीं देंगे। क्यों नहीं दोगे पूछने पर साहब बोला कि तुम नहीं जानते मैं कौन हूँ। आप जो भी होगे पर किये काम के पैसे तो देने होंगे कहने पर साहब ने प्रिन्टिंग प्रेस ऑपरेटर को बुला लिया। ऑपरेटर मुझे बोला कि तुम्हें बोलना नहीं आता और यही बात बड़े भाई को कही। अगले दिन मुझे पैसे दे दिये....... प्रिन्ट पैकेजिंग फैक्ट्री में सुबह 9 से रात 9 बजे की शिफ्ट है और एक दिन छोड़ कर 36 घण्टे लगातार काम करना पड़ता है, सुबह 9 से रात 9 से अगली सुबह 9 से रात 9 बजे तक काम। हैल्पर की तनखा 5000, इंकमैन की 5500, फिटरमैन की 6000 और ऑपरेटर की 12,000 रुपये। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से। बारह घण्टे में, 36 घण्टे में कम्पनी एक कप चाय भी नहीं देती — हाँ, 36 घण्टे पर रोटी के लिये 60 रुपये देते हैं। रविवार को भी काम। यहाँ ***सैमसंग, नोकिया*** मोबाइलों के छोटे-बड़े डिब्बों के संग टी वी तथा पँखों के डिब्बे और दवाई की डिब्बियाँ तैयार की जाती हैं। साठ मजदूरों में ई.एस.आई. व पी.एफ. दो-तीन मजदूरों की ही हैं।''

सुपर ऑटो श्रमिक : '' प्लॉट 80 सैक्टर-6, फरीदाबाद स्थित फैक्ट्री में 20 सी एन सी ऑपरेटरों ने 10 जून को सुबह की शिफ्ट में मशीनें चालू नहीं की। रात की शिफ्ट वाले सी एन सी ऑपरेटरों ने भी मशीनें बन्द रखी। अगले रोज, 11 जून को भी इन मजदूरों ने मशीनें बन्द रखी। मैनेजमेन्ट ने जून माह से सी एन सी ऑपरेटरों की तनखा बढाने का आश्वासन दिया तब 12 जून से मशीनें चालू की गई। मई की तनखा 8 जून को दी गई थी, 9 का रविवार था — 10 जून को मजदूरों ने कदम उठाया। सुपर ऑटो कम्पनी की प्लॉट 80 फैक्ट्री में 40 सी एन सी ऑपरेटरों के अलावा 450 अन्य मजदूर काम करते हैं। यहाँ डाई कास्टिंग द्वारा 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में ***होण्डा*** और ***हीरो*** दुपहियों के हिस्से-पुर्जे बनते हैं। ओवर टाइम का भुगतान दुगुनी दर की बजाय कम्पनी सिंगल रेट से करती है।''

अफलाटैक्स कामगार : '' प्लॉट 10 सैक्टर-8, आई.एम.टी. मानेसर स्थित फैक्ट्री में 1500-2000 मजदूर रोज 9½ सुबह से रात 1 बजे तक काम करते हैं। पचास महिला मजदूरों की सुबह 9½ से रात 8½ की ड्युटी है। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से है। मजदूरों में स्थाई एक भी नहीं है, चार ठेकेदारों के जरिये सब मजदूर रखे हैं। सिलाई कारीगर पीस रेट पर हैं। हैल्परों की तनखा 5212 और चैकरों की 6450 रुपये। यहाँ ***मोनाप्रिक्स, मानसून*** आदि के वस्त्र तैयार किये जाते हैं। फैक्ट्री में कैन्टीन है। दिन में थाली 30 रुपये की देते हैं जबकि रात सवा आठ बजे भोजन कम्पनी देती है। रोज सुबह 9½ से रात 1 बजे तक काम और फिर निवास स्थान आने-जाने में लगता समय — मजदूरों की नींद पूरी नहीं होती। रात सवा आठ बजे कम्पनी जो भोजन देती है उसमें बदबू आती है जो किसी दवाई की लगती है। मजदूरों को फैक्ट्री में नींद नहीं आये ऐसी दवा भोजन में मिलाते लगते हैं। इस सम्बन्ध में शिकायतों का अधिकारी उत्तर नहीं देते।''

पुष्पा प्रेस वरकर : '' प्लॉट बी-3/1 ओखला फेज-2, दिल्ली स्थित फैक्ट्री में सुबह 9½ से रात 8 और रात 8 से अगली सुबह 9½ तक की शिफ्टों में ***एन सी ई आर टी*** की किताबें छपती हैं। दिन में 10½ घण्टे और रात में 13½ घण्टे काम, ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से। बेसमेन्ट व भूतल पर चार रंग तथा पाँच रंग वाली प्रिन्टिंग प्रेस हैं। चार रंग वाली मशीन पर हैल्परों की तनखा 4400-4500 रुपये..... झगड़ा करने पर साहब ने जून की तनखा में 1000 रुपये बढाने का आश्वासन दिया है। ऊपर की मंजिल पर ठेकेदार के जरिये रखे 10 मजदूर फोल्डिंग-सिलाई-कटिंग-बाइन्डिंग-कवर के साथ किताबें तैयार करते हैं। यह मजदूर 14-15 वर्ष आयु के लड़के हैं और फेज-2 की झुग्गियों में रहते हैं। इन्हें घण्टे के हिसाब से पैसे देते हैं, 17-18 रुपये प्रतिघण्टा। इनका काम 24 घण्टे लगातार जारी रहता है — बीच में आराम करके लड़के फिर काम करने आ जाते हैं। यह 10 लड़के 24 घण्टे में 25-30 हजार किताबें तैयार करते हैं। नीचे से छपी हुई 800 शीट के फर्मे उठा-उठा कर सिर पर रख कर ऊपर ले जाने पड़ते हैं। जब-तब किसी लड़के से बोझ उठता नहीं — काम बहुत ज्यादा है और ठेकेदार गाली देता है।''

वीनस कारपोरेशन मजदूर : '' प्लॉट 262 वी, सैक्टर-24, फरीदाबाद स्थित फैक्ट्री में ***मारुति सुजुकी*** का काम होता है। यहाँ 70-75 पावर प्रेस हैं। ओपन डाई ज्यादा हैं जिनमें हाथ बहुत कटते हैं — एक वर्ष में कम से कम 50 मजदूरों के हाथ कटते हैं। महीने-दो महीने से नौकरी कर रहों को हाथ कटने पर ई.एस.आई. अस्पताल नहीं ले जाते, बाहर से ही पट्टी करवा कर और कुछ पैसे दे कर भगा देते हैं। वीनस कम्पनी की इस फैक्ट्री में 70 स्थाई मजदूर और दो ठेकेदारों के जरिये रखे 600 से ज्यादा मजदूर काम करते हैं। यहाँ 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। यूनियन है — स्थाई मजदूरों को ओवर टाइम का भुगतान दुगुनी दर से जबकि ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों को सिंगल रेट से। इधर मारुति सुजुकी में 7 दिन काम बन्द है इसलिये यहाँ 12 की बजाय अभी 8½ घण्टे की दो शिफ्टों में काम हो रहा है।''

विमल मोल्डर्स श्रमिक : ''प्लॉट 446 के, सैक्टर-8, आई एम टी मानेसर स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में इंजेक्शन मोल्डिंग से ***लुमैक्स, सुबरोस, अस्ती, होण्डा*** दुपहियों के प्लास्टिक के पार्ट्स बनते हैं। रविवार को दिन में ही 10-12 घण्टे ही काम (वैसे बड़ी मशीन रविवार रात को भी चलती हैं)। महिला मजदूर 5-6 हैं और उनकी सुबह 8 से रात 8 की ही शिफ्ट है। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से। स्थाई मजदूर 4-5 हैं और ठेकेदार के जरिये रखे मजदूर 115 हैं। गर्म काम है, 18 मोल्डिंग मशीनें हैं और उन पर ही 18 पँखे चाहियें पर थे 3 ही, इधर मई-अन्त में जा कर दो मशीनों पर एक पँखा लगाया है। फैक्ट्री में कई अन्य स्थानों पर पँखे हैं ही नहीं। रात को रौशनी भी कम रहती है — लाइटें कम हैं। डायरेक्टर सुबह 10 से रात 9 तक फैक्ट्री में चक्कर लगाता रहता है, डाँटता-फटकारता है, दबाव के कारण पानी-पेशाब भी रोकना पड़ता है।''

स्टैन्डर्ड कॉटन कामगार : '' प्लॉट बी-101 ओखला फेज-1, दिल्ली स्थित इमारत में दो बेसमेन्ट के ऊपर तीन मंजिल हैं। नीचे प्रिन्टिंग प्रेस पर छपाई तथा डिब्बे बनते हैं और ऊपर की मंजिल पर महिलाओं के चमड़े के थैले बनते हैं। चमड़े की सिलाई करते कारीगरों की रोज सुबह 9 से रात 1 बजे की ड्युटी है। रविवार को भी काम। धागे काटने वाली 10-12 महिला मजदूरों की सुबह 9 से रात 11 की ड्युटी। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से। महिला मजदूरों की तनखा 4000-4500 रुपये, पुरुष हैल्परों की 5500-6000 और कारीगरों की 6500-8000 रुपये। एक सौ मजदूर चमड़े के थैले बनाते हैं और किसी भी मजदूर की ई.एस.आई. व पी.एफ. नहीं हैं।''

विनय ऑटो वरकर : ''प्लॉट 42 सैक्टर-3, आई.एम.टी. मानेसर स्थित फैक्ट्री में 100 स्थाई मजदूर और पाँच ठेकेदारों के जरिये रखे 600 मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में ***नपिनो, मिण्डा, जे एन एस, डेन्सो*** का इन्जेक्शन मोल्डिंग का कार्य करते हैं। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से भी कम, 20-22 रुपये प्रतिघण्टा। इस वर्ष जनवरी माह में ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों की तनखा में 600-700 रुपये बढाये थे। मई माह के वेतन में से वे 600-700 रुपये काट लिये। जनवरी में हैल्परों की तनखा 5800 रुपये थी, मई में यह 5212 रुपये कर दी है और ऐसा ही ऑपरेटरों के साथ किया है।''

हँसते बहुत हैं

युवा मजदूर : ''नये-नये लड़के हैं। बहुत हँसते हैं। पैसे कम मिलते हैं। पुरानों की बात नहीं मानते। मार-पीट के लिये तैयार रहते हैं। ड्युटी के दौरान मोबाइल पर फिल्म देखते हैं। गाने बजा कर काम करते हैं....... डायरेक्टर बोलता है : मोबाइल बन्द कर काम किया करो। थोड़ी देर बन्द। साहब की पीठ मुड़ते ही गाने फिर चालू। अपमान महसूस कर साहब चुपचाप चले जाते हैं। आवाज आती है : गाना क्यों बन्द किया ? उत्तर गूँजता है : चोर आया था !''

ईंट भट्ठा मजदूर (पत्र)

अगर मैं आप से पूछूँ कि ईंट का रंग लाल क्यों होता है तो आप कहेंगे कि आग में पकाने से, लेकिन मैं आपके इस उत्तर से सन्तुष्ट नहीं हूँ। मेरा मानना है कि ईंट का रंग लाल होता है क्योंकि ईंट को मजदूरों के खून से बनाया जाता है।

मैंने पिछले दिनों अपने आसपास के ईंट भट्ठों पर जा कर मजदूरों की असली स्थिति का पता लगाया। भट्ठों पर मजदूर कई नामों से व अलग-अलग कामों से जाने जाते हैं। मुख्य काम इस प्रकार हैं — पथाई, भराई, बेलदार, निकासी, जलाई, राविस। ये सभी मजदूर ईंट भट्ठों के परिसरों में किसी कोने में झुग्गी-झोंपड़ी बना कर रहते हैं।..... ये मजदूर लगभग सपरिवार ही मजदूरी करते हैं। वर्षा ऋतु को छोड़ कर सभी ऋतुओं में प्रतिदिन करीब 12 घण्टे काम करते हैं। कोई छुट्टी नहीं होती। इन मजदूरों में 10 से ले कर 70 वर्ष तक के मजदूर देखे जाते हैं।....

..... इन मजदूरों को सिर्फ 80 से 150 रुपये तक प्रतिदिन मिल पाता है। खाना, दवा, अन्य सभी खर्चे इसी में शामिल हैं। अलग से कुछ नहीं मिलता। कई मजदूरों का हिसाब पिछले चार-पाँच वर्षों से होना पड़ा है। मुनीम हिसाब करने के नाम पर बहाने बनाता रहता है। अधिकतर भट्ठा मजदूर कर्जदार हैं......

— मुकेश कुमार, फतेहाबाद (आगरा)

सब और सब का...... *(पेज एक का शेष)*

व्हर्लपूल में 800 स्थाई मजदूर हैं और तीन गुणा अधिक रेफ्रिजिरेटर बनते हैं। व्हर्लपूल में मात्र असेम्बली होती है, कम्प्रेसर और प्लास्टिक डिविजन अन्य कम्पनियों को बेच दिये गये। असेम्बली लाइनों पर अगल-बगल में परमानेन्ट तथा टेम्परेरी वरकर काम करते हैं — स्थाई मजदूर की तनखा 35,000 रुपये जबकि कैजुअल वरकर की 6,500 रुपये।

✶ फरीदाबाद में ***आयशर ट्रैक्टर*** फैक्ट्री में 1989 में लाइन पर 15 मिनट में एक ट्रैक्टर असेम्बल करने पर कम्पनी ने मजदूरों को पुरस्कार दिया था। लाइन की गति बढाते रहे और एक ट्रैक्टर 7 मिनट में बनने लगा। कम्पनी ने सन् 2000 में भोपाल में दूसरी ट्रैक्टर फैक्ट्री खोली। फरीदाबाद में स्थाई मजदूरों को कम करने में बढती दिक्कतें — कम्पनी ने 2003 में यहाँ फैक्ट्री ही बन्द कर दी।

✶ फरीदाबाद स्थित ***एस्कोर्ट्स*** समूह 1990 तक भारत में उत्पादन क्षेत्र की दस बड़ी कम्पनियों में था। इलेक्ट्रोनिक्स के आने पर प्लान्टों की रीइंजीनियरिंग हुई। लेथों के स्थान पर सी एन सी मशीनें आई और बड़े पैमाने पर छँटनी की स्थिति बनी। उत्पादन कार्य करते 98 प्रतिशत मजदूर स्थाई थे। ऐसे में बड़े पैमाने पर मजदूरों को निकालने के लिये मैनेजमेन्ट-यूनियन समझौता हुआ पर एस्कोर्ट्स मजदूरों ने उसे फेल कर दिया। मैनेजमेन्ट के वर्ष पीछे 105 दिन के पैसे, 58 वर्ष आयु तक की पूरी तनखा वाले प्रस्ताव भी मजदूरों ने ठुकरा दिये। ***यामाहा, जे सी बी, क्लास*** एस्कोर्ट्स से अलग हुये। रिटायरमेन्ट और नई भर्ती नहीं करने की राह ही कम्पनी के पास बची। फैक्ट्रियों से बाहर काम करवाने और बड़ी सँख्या में कैजुअल वरकर रखने का सिलसिला बढा।

✶ गुड़गाँव स्थित ***मारुति सुजुकी*** कम्पनी ने 1997 में उत्पादन कार्य में टेम्परेरी वरकर रखने आरम्भ किये। मजदूरों को उकसा कर कुचलने के बाद कम्पनी ने 2000 **(बाकी पेज चार पर)**

निमन्त्रण

जुलाई में 28 तारीख वाले रविवार को मिलेंगे। सुबह 10 से देर साँय तक अपनी सुविधा अनुसार आप आ सकते हैं। हकलाना-काब्बा बोलना कोई झिझक की बात नहीं है। टुकड़ों में ही बातों के बारे में बेफिकर रहिये।

क्या करें और क्या नहीं करें, कैसे करें और कैसे नहीं करें हमारे लिये महत्वपूर्ण हैं। इस सन्दर्भ में प्रत्येक के अनुभव व विचारों का स्वागत है। एक अनुरोध : कृपया वाक्‌युद्ध से बचने की कोशिश कीजिये ; चर्चाओं को-बहस को समेटने-समाप्त करने के प्रयास मत कीजिये; आदरपूर्ण और आनन्दपूर्ण बातचीत की कोशिश करें। यह बातचीतें मुख्यतः व्यवहार, बेहतर व्यवहार के लिये हैं।

महिला मजदूर

अनुभवी महिला मजदूर : 1986 में फैक्ट्री में लगी थी। परमानेन्ट हो गई। 1994 में नौकरी से निकाल दी गई। नये सिरे से फैक्ट्रियों में काम करना आरम्भ किया पर इधर पक्का करना बन्द-सा हो गया है। सात महीने में ब्रेक कर ही देते हैं। फैक्ट्रियों में बार-बार के इन ब्रकों के बाद बल्लभगढ में एक वर्कशॉप में लगी। वहाँ गाड़ियों के मीटर बनते थे। काम करते चार वर्ष हो गये तब फोरमैन ज्यादा परेशान करने लगा — यहाँ नहीं, वहाँ काम करो, वहाँ नहीं वहाँ काम करो..... फोरमैन से लड़ाई कर नौकरी छोड़ दी। मार्च 2012 में संजय मेमोरियल इन्डस्ट्रीयल एस्टेट में एक फैक्ट्री में पावर प्रेस चलाने लगी। संयोग से 25 अगस्त को सुपरवाइजर ने मुझे पावर प्रेस की जगह बर्र हटाने, पीस घिसने में लगा दिया और दूसरी महिला को पावर प्रेस पर बैठा दिया। उस महिला की एक पूरी उँगली कट गई..... मैंने पावर प्रेस पर काम नहीं करने का निर्णय लिया और फौरन नौकरी छोड़ दी। उस फैक्ट्री में आज 4 जुलाई को एक लड़के की दो उँगली कट गई — मैं उसे कहती रही थी कि पावर प्रेस छोड़ दे पर वह नहीं माना, कहता था कि 7 साल हो गये, कुछ नहीं होता....

पावर प्रेस पर काम छोड़ कर मैं मुजेसर में एक वर्कशॉप में ड्रिल मशीन पर लगी हूँ। मेरी रोज 10½ घण्टे की ड्युटी है और रविवार को 8 घण्टे की जबकि बगल की वर्कशॉप में महिला मजदूरों को रोज 12 घण्टे काम करना पड़ता है — 12 घण्टे नहीं करना है तो जाओ। बगल में रोज 12 घण्टे ड्युटी करती 8 महिला मजदूर पावर प्रेस भी चलाती हैं और फोरमैन उनके सिर पर खड़ा रहता है, डाँटता रहता है। मेरी तनखा 4200 रुपये है और ओवर टाइम के 15-16 रुपये प्रतिघण्टा.....

कुछ लालच के चक्कर में और कुछ मजबूरी में औरतें पावर प्रेस चलाती हैं। एक 50-52 वर्ष की महिला संजय मेमोरियल में 4500 रुपये तनखा में एक फैक्ट्री में माल साफ करती थी। सुपरवाइजर से खटपट हुई और उन्होंने नौकरी छोड़ दी। अब वे सैक्टर-24 में एक फैक्ट्री में 4800 रुपये तनखा में पावर प्रेस पर लगी हैं। पहले दिन पावर प्रेस पर बाहर से पीस लगाना पड़ा, डर नहीं। दूसरे दिन सुपरवाइजर ने एक अन्य महिला को उस मशीन पर बैठा दिया और उन्हें दूसरी पावर प्रेस पर बैठा दिया जहाँ हाथ अन्दर डालना पड़ता है। एतराज करने पर सुपरवाइजर बोला कि माताजी यहाँ काम करना है तो करो नहीं तो जाओ। मैंने कहा कि आँटी पावर प्रेस पर काम क्यों कर रही हो, कहीं दो पैसे कम ले लो — पर वे वहीं काम कर रही हैं, लालच वाली बात है। सैक्टर-24 में ही एक अन्य फैक्ट्री में एक महिला 6500 रुपये तनखा में पावर प्रेस चलाती है। वह रोज 10 घण्टे काम करती है। पाँच बच्चे हैं, पति कभी काम पर जाता है और कभी नहीं जाता, जो कमाता है उसकी दारू पी जाता है, रोटी घर पर खाता है पर घर खर्च के लिये पैसे नहीं देता..... तीन महीने पहले एक फैक्ट्री में पावर प्रेस चलाती दो महिलाओं से मेरी बात हुई। उस दिन उनके साथ पावर प्रेस चलाती एक महिला का पूरा हाथ तहस-नहस हो गया था। वे कह रही थी : उसके दो बच्चे हैं, रोटी कैसे बनायेगी.....

जुड़ने–जोड़ने के लिये

मजदूर हितैषी मजदूर

लक्ष्य है : मजदूरों की सक्रियता बढाने में योगदान देना

सदस्य बनें, सहयोगी बनें

1. कानून हैं शोषण के लिये और छूट है कानून से परे शोषण की।

2. कानून अनुसार शोषण मुख्य तरीका है शोषण का।..... भाप-कोयले की मशीनों के दबदबे के दौरान शोषण की दर एक सौ-दो सौ प्रतिशत थी। आज इलेक्ट्रोनिक्स वाली मशीनों के दौर में मजदूर आठ-दस मिनट के काम द्वारा अपनी दिहाड़ी पैदा कर देते हैं। आज शोषण की दर तीन हजार-चार हजार प्रतिशत है। ..... आज मजदूर जो पैदा करते हैं उसके आधे से ज्यादा हिस्से, पचास प्रतिशत से अधिक को सरकारें टैक्सों के रूप में वसूल करती हैं। आज मजदूर जो उत्पादन करते हैं उसका एक-डेढ प्रतिशत हिस्सा ही मजदूरों को मिलता है। यह मजदूरों की आर्थिक दुर्दशा का मुख्य कारण है और इसकी समाप्ति के लिये मजदूरी-प्रथा का उन्मूलन एक अनिवार्य आवश्यकता है।

3. ....हम बहुत बड़े परिवर्तन के दौर में हैं। ज्यादा से ज्यादा मजदूरों की सक्रियता बहुत-ही जरूरी है अन्यथा बर्बादी हमारे सामने मुँह बाये खड़ी है। 4. इन हालात में कानून से परे शोषण के खिलाफ एक और संगठित प्रयास के तौर पर... ***मजदूर हितैषी मजदूर*** संगठन का गठन कर रहे हैं।...

8. ***मजदूर हितैषी मजदूर*** संगठन के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये हम सदस्य बनने की अपील कर रहे हैं। जो मजदूर दिन काटने की बजाय जीवन जीने के प्रयास करना चाहते हैं उन्हें हमारा निमन्त्रण है : **मजदूर हितैषी मजदूर** संगठन के सदस्य बनें। ''समय नहीं है'' के इस दौर में कुछ समय देना सदस्यता की अनिवार्य शर्त है। संगठन किसी भी संस्था से कोई आर्थिक योगदान नहीं लेगा इसलिये संगठन का सदस्यता शुल्क पाँच रुपये होगा और मासिक आर्थिक योगदान स्वैच्छिक।

9. सदस्यों की सँख्या और सक्रियता आगे चल कर संगठन की गतिविधियाँ निर्धारित करेगी। इस बीच तीन संयोजक और मित्र अपनी क्षमता अनुसार प्रत्येक मजदूर और मजदूर समूह को कानून से परे शोषण के खिलाफ कदम उठाने में सहयोग करेंगे।

मजदूर हितैषी मजदूर संगठन का अस्थाई कार्यालय मजदूर लाइब्रेरी, ऑटोपिन झुग्गी, एन आई टी फरीदाबाद– 121001 है।

फोन : 0129–6567014

1. प्रताप सिंह, संयोजक : हरियाणा राज्य बिजली बोर्ड के कर्मचारी रहे हैं और अब वकालात करते हैं, मुख्यतः कर्मचारियों के केस लड़ते हैं।

फोन : 9818772710

2. जवाहर लाल, संयोजक : पोरिट्स एण्ड स्पैन्सर (वॉयथ) फैक्ट्री के मजदूर रहे हैं और अब श्रम न्यायालय में मजदूरों के केस लड़ते हैं। फोन : 9810933587

3. सतीश कुमार, संयोजक : गुडईयर टायर फैक्ट्री के मजदूर रहे हैं और अब ''मजदूर मोर्चा'' के सम्पादक हैं।

सूरज

7 जून को रात 7½-8 बजे वर्कशॉपवाले ने फोन पर सूरज की बहन से पूछा कि वह कहाँ गया। न्यू टाउन फरीदाबाद में ऑटोपिन झुग्गियों में रहते सूरज से गन्दे नाले के पार स्थित वर्कशॉप में उसकी बहन कुछ समय पहले ही मिल कर आई थी। बहन फिर वर्कशॉप गई और वहाँ सूरज नहीं मिला तो बाटा चौक पर उसे ढूँढा। सूरज नहीं मिला।

वर्कशॉप में दो पावर प्रेस। सूरज समेत पाँच 15-17 वर्ष के लड़के वर्कशॉप में काम करते थे। कुछ समय पहले लोहे की चद्दर से सूरज का पैर कटा था — 9 टाँके आये थे। घण्टे-दो घण्टे बीच-बीच में छोड़ कर सूरज चौबिसों घण्टे वर्कशॉप में काम करता था। सूरज के माता-पिता की 3-4 वर्ष पहले मृत्यु हो गई थी और फिर जीजा का भी देहान्त हो गया। अपाहिज बहन और उसके तीन बच्चों की जिम्मेदारी 15 वर्षीय सूरज पर — दो बड़े भाइयों में एक का स्वास्थ्य बहुत खराब तथा दूसरा आवारागर्दी में। बहन को मिलती जीजा की पेन्शन तथा अपाहिज की राशि से परिवार का गुजारा..... सूरज ने तनखा और ओवर टाइम से पिछले महीने में 7500 रुपये बनाये थे।

बीमार भाई सूरज को देखने गया तो लोग बत्तियाँ बन्द कर वर्कशॉप बन्द करते मिले — सूरज का शरीर वहाँ पड़ा था। टोकने पर उसे एक किनारे कर वर्कशॉपवाले का बड़ा भाई तथा दो-तीन वरकर सूरज को ऑटो में डाल कर एस्कोर्ट्स फोर्टिस अस्पताल ले गये। पता चलने पर सूरज की बहन अस्पताल पहुँची और वहाँ पूछा तो एक डॉक्टर बोला कि सूरज नाम का कोई मरीज नहीं है। पुलिस में शिकायत की तब अस्पताल वालों ने सूरज की लाश उसकी बहन को दिखाई।

8 जून को पुलिसवाले ऑटोपिन झुग्गी में सूरज की बहन के पास आये। लोग एकत्र हो गये। पुलिसवाले बोले कि वर्कशॉपवाला यहाँ नहीं आयेगा, मुजेसर थाने चलो। महिलाओं के बीच चर्चायें : दलालों के चक्कर में मत पड़ो। थाने मत जाओ। यहाँ सड़क पर लाश रख कर बैठ जाओ। गाँवों में लोग ऐसा ही करते हैं। पुलिस और प्रशासन के अधिकारी घण्टे-भर में यहीं आ जायेंगे। कई महिलायें इसके लिये तैयार पर आगे सूरज की बहन हो तभी तो यह कर सकते हैं। अन्ततः लोग थाने गये।

चिलचिलाती धूप में 35-40 स्त्री-पुरुष थाने गये। गेट पर थाने का रसोईया बोला : एक पड़ोसी के लिये इतने लोग आये हो! थाने में 5-6 घण्टे खींचा-तान। दस लाख से 6 लाख होते हुये 2 लाख 80 हजार रुपये सूरज की बहन को वर्कशॉपवाले द्वारा देने पर समझौता हुआ। सूरज का दाहसंस्कार कर दिया गया।■

ड्राइवर

प्लॉट 4 सैक्टर-3, आई एम टी मानेसर स्थित जे एन एस फैक्ट्री से वाहनों के मीटर लाद कर जून-आरम्भ में सुबह 6½ बजे ट्रक ड्राइवर हीरो फैक्ट्री के लिये हैल्पर के साथ निकला। एक मिनट भी पूरा नहीं हुआ था कि होण्डा फैक्ट्री के सामने एक्सीडेन्ट हो गया। ड्राइवर की तत्काल मृत्यु। हैल्पर का पैर कटा।■

सब और सब का...... *(पेज तीन का शेष)*

तथा 2001 में 2500 स्थाई मजदूर नौकरी से निकाले थे। सन् 2011 में मारुति सुजुकी में 15 प्रतिशत परमानेन्ट और 85 प्रतिशत टेम्परेरी वरकर थे।

★ गुड़गाँव में ***हीरो*** कम्पनी की स्पेयर पार्ट्स फैक्ट्री में ठेकेदारों के जरिये रखे 4500 मजदूर ठेकेदारी-प्रथा खत्म करो की माँग रख कर 2006 में एक दिन फैक्ट्री के अन्दर बैठ गये। चार दिन बैठे रहे। मैनेजमेन्ट ने बातचीत के लिये मजदूरों से प्रतिनिधि माँगे और उनके जरिये मामला रफा-दफा किया। कुछ ही समय बाद, आई एम टी मानेसर स्थित ***होण्डा*** फैक्ट्री में 18 सितम्बर 2006 को लीडरों ने मैनेजमेन्ट-यूनियन दीर्घकालीन समझौता सुनाया। अगले दिन, 19 सितम्बर को सुबह 6½ बजे की शिफ्ट में स्थाई मजदूर कार्यस्थलों पर गये लेकिन ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूर कार्यस्थलों पर जाने की बजाय कैन्टीन में जा कर बैठ गये थे। बी-शिफ्ट के उनके साथी फैक्ट्री गेट के सामने सुबह से ही एकत्र हो गये थे। होण्डा मैनेजमेन्ट-यूनियन-पुलिस-प्रशासन-न्यायालय एक तरफ और दूसरी तरफ टेम्परेरी वरकर। पाँच दिन फैक्ट्री के अन्दर मजदूर बैठे रहे थे। इन मजदूरों में कुछ मजदूर वह भी थे जो कुछ समय पहले हीरो फैक्ट्री के अन्दर चार दिन बैठने वाले मजदूरों में शामिल थे।

डेल्फी और खासकरके ***मारुति सुजुकी मानेसर*** की चर्चा अगले अंक में करेंगे। (जारी)

मजदूर समाचार में साझेदारी के लिये

★ अपने अनुभव व विचार इसमें छपवा कर चर्चाओं को कुछ और बढवाइये। नाम नहीं बताये जाते और अपनी बातें छपवाने के कोई पैसे नहीं लगते। ★ बाँटने वाले फ्री में यह करते हैं। सड़क पर मजदूर समाचार लेते समय इच्छा हो तो बेझिझक पैसे दे सकते हैं। रुपये–पैसे की दिक्कत रहती है। ★ महीने में एक बार छापते हैं, 10,000 प्रतियाँ निशुल्क बाँटने का प्रयास करते हैं। मजदूर समाचार में आपको कोई बात गलत लगे तो हमें अवश्य बतायें, अन्यथा भी चर्चाओं के लिए समय निकालें।

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे0 के0 आफसैट दिल्ली से मुद्रित किया। सौरभ लेजर टाइपसैटर्स, बी–551 नेहरु ग्राउंड, फरीदाबाद द्वारा टाइपसैट। **RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73/12-14**